ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-7* August- 2021
Innovation The Research Concept

संप्रेषण की प्रभावशीलता का महत्व (शिक्षण के संदर्भ में)

The Importance of Communication Effectiveness (In The Context of Teaching)

Paper Submission: 14/08/2021, Date of Acceptance: 25/08/2021, Date of Publication:26/08/2021

जागृति शर्मा
प्रवक्ता,
आत्माराम शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, बस्सी,
जयपुर, राजस्थान, भारत

अन्जु कुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसर,
तिलक पीजी कॉलेज,
बस्सी, जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

प्रकृति में प्रत्येक जीव को अपनी भावनाएं सम्प्रेषित करके स्वयं को व्यक्त करने की क्षमता प्राप्त है यह क्षमता मनुष्य में सर्वाधिक पायी जाती है। शाब्दिक एवं अशाब्दिक सम्प्रेषण द्वारा मनुष्य अपनी भावनाओं, अनुभवों तथा विचारों का आदान प्रदान करता है, सभी आपसी संबंध इसी संप्रेक्षण की प्रभावशीलता पर आधारित होते है शिक्षण के संदर्भ में यदि देखा जाये तो सम्प्रेषण की प्रभावशीलता कही जा सकती है। इसमें शिक्षको को अपने विचारों, जानकारियों को शिक्षार्थियों तक सरल रूप में पहुंचाना होता है, जिस शिक्षक में सम्प्रेषण का गुण जितना अधिक होता है, वह उतना ही अधिक प्रभावी शिक्षक होगा। कक्षा का अच्छा वातावरण या शिक्षार्थियों को प्रेरित करना शिक्षक के प्रभावशाली सम्प्रेक्षण से ही संभव है। इसके लिये सम्प्रेषण का अर्थ, संप्रेक्षण का महत्व, संप्रेक्षण की प्रभावशीलता, सम्प्रेषण के विभिन्न साधनों की जानकारी शिक्षक को होनी आवश्यक प्रतीत होती है।

Every living being in nature has the ability to express himself by communicating his feelings, this ability is found the most in man. Through verbal and non-verbal communication, human beings exchange their feelings, experiences and thoughts, all mutual relations are based on the effectiveness of this communication, if seen in the context of teaching, then the effectiveness of communication can be said. In this, teachers have to convey their ideas and information to the learners in a simple form, the more the quality of communication in the teacher, the more effective the teacher will be. Good classroom environment or motivating the learners is possible only with the effective observation of the teacher. For this, it seems necessary for the teacher to know the meaning of communication, importance of communication, effectiveness of communication, various means of communication.

मुख्य शब्द : सम्प्रेषण, प्रभावशीलता, अधिगम, पाठ्यवस्तु, विश्लेषण, अभिसूचना, प्रेषक, अचेतन, संज्ञानात्मक, सामजस्य, सांकेतिक, मार्गदर्शन आदि।

Communication, Effectiveness, Learning, Content, Analysis, Information, Sender, Unconscious, Cognitive, Cohesive, Indicative, Guiding, etc.

प्रस्तावना

सम्प्रेषण का मानव जीवन के साथ साथ शिक्षण में विशेष महत्व है। व्यक्ति के समस्त क्रियाकलाप सम्प्रेषण के माध्यम से ही सम्पन्न होते है सम्प्रेषण का प्रयोग शिक्षा तथा शोध दोनों ही क्रियाओं में किया जाता है। शिक्षण प्रक्रिया में ज्ञान की पाठ्य वस्तु का संचार एवं प्रसारण नई पीढी को दिया जाताहै मानवीय ज्ञान का संचयन पुस्तकों, पुस्तकालयों, पत्र पत्रिकाओं, इन्टरनेट, सी.डी. तथा फिल्म के माध्यम से किया जाता है।

इस प्रकार मानवीय ज्ञान की तीन अवस्थाएं होती हैं -

1. मानवीय ज्ञान का संचय करना।
2. मानवीय ज्ञान का संचय एवं प्रसार करना।
3. मानवीय ज्ञान की वृद्धि एवं विकास करना।

मानवीय ज्ञान की तीनों अवस्थाओं में सम्प्रेषण माध्यमों का विशेष महत्व है. सम्प्रेषण माध्यमों की सहायता से ही ज्ञान का संचय होता है। प्रसार होता है तथा मानवीय ज्ञान की वृद्धि होती है। पाठ्यवस्तु विश्लेषण सम्प्रेषण माध्यामों का एक महत्वपूर्ण पक्ष है।

सम्प्रेषण का अर्थ

शाब्दिक अर्थ - सम्प्रेषण दो शब्दों से मिलकर बना है। सम्प्रेषित अर्थात समान रूप से भेजना। इसके लिये अंग्रेजी में Communication शब्द का प्रयोग किया जाता है। जिसका प्रादुर्भाव लेटिन के Commun तथा Commsis से हुआ है। इसका अर्थ है कि समान बनाना। (To Make Common) हम अपनी बात ज्ञान तथा विचारों को विविध माध्यमों से दूसरों तक पहुंचाकर उन्हें समान बना देते है। हम भाषा संकेत, इशारे, हाव भाव आदि के माध्यम से अपने विचार बात तथ्य आदि का सम्प्रेषण करते है। सभी प्रकार के सम्प्रेषणो में एक सम्प्रेषक (प्रेषक) होता है प्रेषक कुछ कहना चाहता है या अधिसूचना भेजना चाहता है। प्रेषक कहने में मौखिक सम्प्रेषण करता और अभिसूचना भेजने में लिखित सम्प्रेषण भी करता है इसे सम्प्रेषण का माध्यम कहते है।

एडर गेले के अनुसार ''सम्प्रेषण विचार विनिमय के मूड में विचारों तथा भावनाओं को परस्पर जाने की प्रक्रिया है।''

एंडरसन के अनुसार ''सम्प्रेषण एक गत्यात्मक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति चेतनामय या अचेतन तथा दूसरांे के संज्ञानात्मक ढांचे को सांकेतिक रूप में उपकरणों या साधनों द्वारा प्रभावित करता है।''

कौलमैन एवं मार्श के शब्दों में ''वे तमाम शैक्षिक और प्रयोगात्मक कार्यक्रम जो कृषि व शिक्षा के क्षेत्र में चलाये जाये, संचार कहलाते है।''

बुरकर के अनुसार ''सम्प्रेषण प्रत्येक उस वस्तु को कहते है जो कि उस सन्देश का अर्थ व्यक्त करती है जिसे एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुंचाया जाता है।

सम्प्रेषण की आवश्यकता एवं महत्व

सम्प्रेषण किसी भी प्रकार की महत्वपूर्ण अनिवार्यता है। संचार अथवा सम्प्रेषण व्यवस्था द्वारा संगठन के विभिन्न सदस्य परस्पर विचारों का आदान प्रदान करते है। सम्प्रेषण व्यवस्था द्वारा ही शिक्षण की विभिन्न क्रियाओं में सामजस्य स्थापित होता है। तथा शिक्षा के उद्देश्य पूरे होते है। कक्षा शिक्षण में सूचनाओं का आदान प्रदान सम्प्रेषण पर आधारित है सम्प्रेक्षण के महत्व को हम निम्न बिन्दुओं की सहायता से स्पष्ट कर सकते है -

1. अध्यापकों का मार्गदर्शन
2. कार्य कुशलता में वृद्धि
3. उचित निर्णय एवं शीघ्र रूप में
4. सौहार्दपूर्ण संबंधों की स्थापना।
5. प्रभावी नेतृत्व की स्थापना।

सम्प्रेषण के उद्देश्य

शिक्षण प्रबंध के दृष्टिकोण से सम्प्रेषण के निम्नलिखित उद्देश्य हो सकते है-

1. कर्मचारियों का विकास करना।
2. विचारों को कार्य रूप प्रदान करना।
3. संगठन की नीतियों कार्य विधियों, व्यवहारों एवं व्याख्याओं से परिचित करना।
4. आदेशों एवं निर्देशों का सम्प्रेषण
5. दिमागी सम्प्रेषण की व्यवस्था करना।
6. समन्वय स्थापित करना।

सम्प्रेषण की प्रकृति एवं विशेषताएं

सम्प्रेषण प्रक्रिया की प्रकृति एवं विशेषताओं का दिग्दर्शन निम्न प्रकार से किया जा सकता है -

1. सम्प्रेषण एक पारस्परिक संबंध स्थापित करने की प्रक्रिया है।
2. इसमें विचार-विमर्श तथा विचार-विनिमय पर विशेष ध्यान दिया जाता है।
3. यह द्विवाही प्रक्रिया है अर्थात इसमें दो पक्ष होते है एक संदेश देने वाला तथा दूसरा ग्रहण करने वाला।
4. सम्प्रेषण प्रक्रिया एक उद्देश्य युक्त प्रक्रिया होती है।
5. सम्प्रेषण में मनोवैज्ञानिक सामाजिक पक्ष (जैसे विचार, संवेदनायें, भावनाएं संवेग समावेशित होते है।)
6. प्रभावी सम्प्रेषण उतम शिक्षण के लिये बुनियादी तत्व है।
7. सम्प्रेषण एवं सुचनाओं में अन्तर है । सूचनाओं में तर्क, औपचारिकता तथा Impersonality की विशेषताएं होती है, जबकि सम्प्रेषण में व्यक्ति या व्यक्तियों के व्यक्तिगत प्रत्यक्षीकरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।
8. प्रत्यक्षीकरण सम्प्रेषण प्रक्रिया में समावेशित होता है।
9. सम्प्रेषण में सामान्यतः व्यक्ति उन्हीं चीजों विचारों, का प्रत्यक्षीकरण करते हैं, जिनकी उन्हें अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं मूल्यो, प्रेरकों, परिस्थितियों या पृष्ठभूमि के अनुसार चाह/ आकांक्षा या प्रत्याशा होती है।
10. सम्प्रेषण मानवीय तथा सामाजिक वातारण को बनाये रखने का कार्य करता है।
11. सम्प्रेषण के चार मुख्य कार्य है -

अ. सूचना प्रदान करना।

ब. निर्देश एवं आदेश या संदेश प्रेषित (प्रसारित करना)

स. परस्पर विश्वास जागृत करना।

द. समन्वय स्थापित करना।

1. सम्प्रेषण की प्रक्रिया में परस्पर अन्त क्रिया तथा पृष्ठ पोषण होना आवश्यक है।
2. सम्प्रेषण एक मानवीय प्रक्रिया है।
3. सम्प्रेषण के बिना शिक्षण असंभव है।
4. सम्प्रेषण में विचारों या सूचनाओं को मौखिक, लिखित अथवा सांकेतिक (संकेतो के रूप में प्रेषित किया जाता है एवं ग्रहण किया जाता है)
5. सम्प्रेषण सदैव गत्यात्मक प्रक्रिया है।

सम्प्रेषण की उपर्युक्त विशेषताओं तथा प्रकृति के आधार पर कहा जा सकता है कि ''सम्प्रेषण एक गत्यात्मक, उद्देश्यपूर्ण दिधुरवीय (द्विवाही) प्रक्रिया है, जिसमें सम्प्रेषण

सामग्री, सम्प्रेषण करने वाला तथा सम्प्रेषण ग्रहण करने वाला ेहोता है व इसमें सूचनाओं तथा विचारों का सम्प्रेषण एवं ग्रहण लिखित मौखिक अथवा संकेतों के माध्यम से होता है।"
(कुलश्रेष्ठ 1998)

सम्प्रेषण की प्रक्रिया

सम्प्रेषण एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानवीय संबंध स्थापित होते है दृढ होते है तथा विकसित होते है। सम्प्रेषण की प्रक्रिया, सामाजिक संरचना में ऐसे गुथे हुए है कि बिना सम्प्रेषण के सामाजिक जीवन की कल्पना करना ही मुश्किल होता है। सम्प्रेषण की प्रक्रिया का सरल मॉडल के रूप में नीचे प्रदर्शित किया जा रहा है।

सम्प्रेषण की प्रक्रिया मॉडल

शिक्षण अधिगम में सम्प्रेषण

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के लिये प्रभावशाली सम्प्रेषण आवश्यक है। प्रभावशाली शिक्षण में शिक्षक एवं छात्र मिल जुल कर प्रभावशाली सम्प्रेषण के लिये प्रयास करते है। हरबर्ट महोदय के अनुसार "शिक्षण का प्रमुख कार्य विचारों, तथ्यों एवं सूचनाओं को छात्र तक पहुंचाना है। "शिक्षक इस हेतु जितने प्रभावशली तरीके से इनका सम्प्रेषण करता है वह उतना ही सफल शिक्षक कहा जाता है शिक्षण एवं प्रशिक्षण के क्षेत्र में छात्रों छात्राध्यापकों को जटिल नियमों, विधियों, पद्धतियों तथा शिक्षक व्यूह रचनाओं (नीतियों) के विषयों में ज्ञान प्रदान करने के लिये अनेक सम्प्रेषण तकनीकों का प्रयोग किया जाता है।

सम्प्रेषण प्रक्रिया के तत्व/घटक

उपर्युक्त मॉडलों के आधार पर सम्प्रेषण प्रक्रिया में निम्नांकित तत्वों का होना आवश्यक होता है-

सम्प्रेषण सन्दर्भ (communication/ context)

अ. भौतिक सन्दर्भ (जैसे - स्कूल, शिक्षण कक्ष आदि)
ब. सामाजिक सन्दर्भ (जैसे - कक्षा या विद्यालय का वातावरण)
स. मनौवैज्ञानिक सन्दर्भ - (जैसे - औपचारिकता/ अनौपचारिक
द. समय सन्दर्भ (यथा दिन का समय तथा समय की अवधि)

संदेश का स्त्रोत (source)

व्यक्ति/ शिक्षक/ घटना जो शाब्दिक या अशाब्दिक संकेत प्रदान करते है संदेश स्त्रोत कहलाते है। सम्प्रेषण प्रक्रिया संदेश स्त्रोत से ही प्रारम्भ होती है जो संदेश की विषय वस्तु निर्धारित करता है उनकी कोडिंग तथा प्रसारण भी करता है।

संदेश (message)

संदेश एक उद्दीपक होता है जो संदेश भेजने वाला प्रेषित करता है। संदेश मौखिक या लिखित संकेतों के रूप में तथा व्यक्ति की मुख मुद्रा या हावभाव के रूप में हो सकता है। संदेश किसी संकेत द्वारा जैसे पोस्टर तथा चार्ट के द्वारा अथवा पैम्फलेट या सूचना पैकेज के रूप में भी प्रेषित किया जा सकता है।

सम्प्रेषण का माध्यम (channel)

सम्प्रेषण के माध्यम का अर्थ है वह साधन जिसके द्वारा कोई संदेश, संदेश स्त्रोत प्राप्त करने वाले तक पहुंचाता है। सम्प्रेषण का माध्यम वह पथ है जिसमें संदेश भौतिकी रूप से प्रेषित किया जाता है। तार, रेडियों, समाचार पत्र, पत्र पत्रिकाएं, पुस्तके सम्प्रेषण के माध्यमों कुछ उदाहरण है।

संकेत या प्रतीक (symbol)

ये प्रतीक या संकेत वे है जो किसी अन्य चीज का प्रतिनिधित्व करते है ये संकेत शाब्दिक या अशाब्दिक भी हो

सकते है शब्द स्वयं में संकेत या प्रतीक होते है।

इनकोडिंग (encoding)

इनकोडिंग वह प्रक्रिया है जिसमें किसी विचार या भावना की अभिव्यक्ति के लिये संकेतों का प्रयोग किया जाता है।

डीकोडिंग (decoding)

यह वह प्रक्रिया है जिसमें संदेश प्राप्त करने वाला व्यक्ति संदेश स्त्रोत से प्राप्त संकेतों का कुटानुवाद कर संदेश ग्रहण करता है।

पृष्ठपोषण (feedback)

यह वह प्रत्युत्तक है जो संदेश प्राप्त करने वाला व्यक्ति संदेश प्राप्त के पश्चात संदेश देने वाले के पास प्रेषित करता है जैसे संदेश प्राप्ति की सूचना, संदेश पढकर अपना मत प्रस्तुत करना आदि।

संदेश ग्रहणकर्ता (receiver)

संदेश ग्रहणकर्ता वह व्यक्ति है जो सम्प्रेषण की प्रक्रिया में संदेश प्राप्त करता है जैसे श्रोता, छात्र, दर्शक पत्र पत्रिकाओं के पाठक आदि।

सम्प्रेषण के प्रकार

प्रभावशाली शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को गत्यात्मक, सक्रिय तथा जीवन्त बनाने के लिये सम्प्रेषण की अनवरता या निरन्तरता आवश्यक होती है। शिक्षण में सम्प्रेषण को कई प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है -

1. शाब्दिक तथा अशाब्दिक सम्प्रेषण।
2. शैक्षिक व सार्वजनिक सम्प्रेषण आदि।

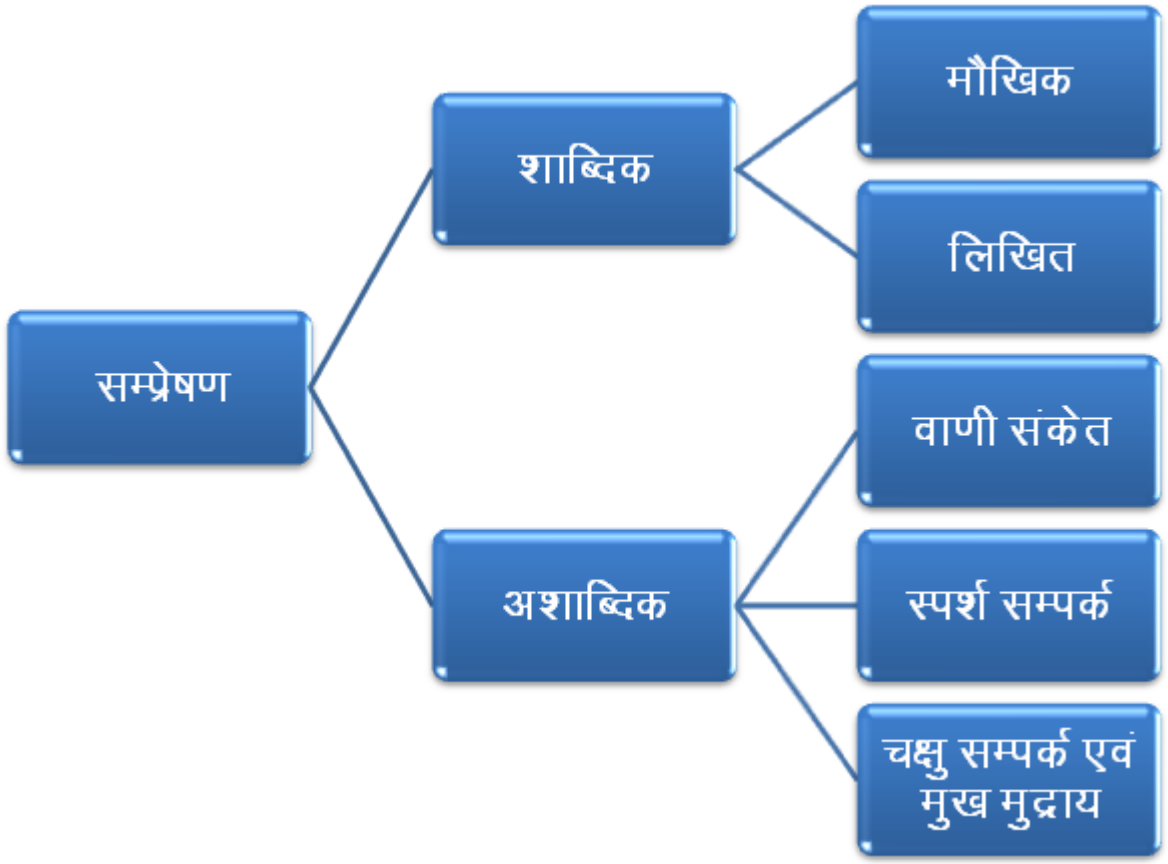

सम्प्रेषण माध्यम (Media in communication)

सम्प्रेषण की प्रक्रिया में मुद्रित एवं अमुद्रित दोनों प्रकार के माध्यमों का उपयोग किया जाता है। सम्प्रेषण माध्यमों की सम्प्रेषण प्रक्रिया में विशेष भूमिका होती है। मुद्रित एवं अमुद्रित दोनो माध्यमों को पुनः निम्नानुसार वर्गीकृत किया जा सकता है-

1. मुद्रित माध्यम

अ. स्व अनुदेशी सामग्री (Self Instructional Material)

ब. अन्य मुद्रित सामग्री जैसे - समाचार पत्र शोध जर्नल, वर्क बुक शब्द कोश एटलस व एन्साइक्लोपीडिया आदि।

2. अमुद्रित माध्यम

अ. श्रव्य माध्यम जैसे - रेडियों व टेपरिकार्डर

ब. दृश्य माध्यम जैसे - चार्ट, नक्शे मॉडल स्लाइडस तथा फिल्म स्ट्रिप, प्रोजक्टर एपीडाईस्कोप आदि।

स. श्रव्य दृश्य माध्यम - टेलीविजन, कम्प्यूटर वीडियों डिस्क टेक्सर तथा टेली कान्फेरैन्सिंग आदि।

निष्कर्ष

मानव समूह के लिये यह आवश्यक है कि उनमें आपस में वैचारिक आदान प्रदान हो। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को प्रभावित करता है यह सम्प्रेषण से ही संभव है। संचार की प्रक्रिया ही सामाजिक एकता व सामाजिक संगठन की एकता का आधार है। सम्प्रेषण के माध्यम से ही अभिवृतियों, इच्छाओं, आदर्शो एवं सूचनाओं आदि का आदान प्रदान होता है। प्रभावी सम्प्रेषण व्यवस्था के द्वारा शिक्षक शिक्षार्थी के मध्य सौहार्दपूर्ण संबंधों द्वारा कार्य में गति आती है उसके शैक्षिक स्तर में सुधार होता है शिक्षक अपेक्षित परिणाम देने में सक्षम हो पाता है।

शिक्षक को यह आवश्यक है कि प्रभावी सम्प्रेषण व्यवस्था लागू कर उनकी इच्छाओं, आकाक्षाओं, अपेक्षाओं एवं भावनाओं का पता लगाकर उन्हें पूरा किया जाए एवं उनको सही दिशा का ज्ञान दिया जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अग्रवाल, जे.सी. "शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबंध" विनोद पुस्तक मंदिर दसवीं संस्करण 2007*
2. *कुलश्रेष्ठ, एस.पी. "शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार" अग्रवाल पब्लिकेशन 2005*
3. *भूषण शैलेन्द्र, कुमार वार्ष्णेय अनिल " शैक्षिक तकनीकी" विनोद पुस्तक मंदिर, दसवीं संस्करण 2007*
4. *मिश्र दिवाकर, "शैक्षिक तकनीकी एवं सम्प्रेषण कौशल अपोलो प्रकाशन जयपुर 2008*
5. *शर्मा आर. ए. "शैक्षिक तकनीकी आधार" विनोद पुस्तक मंदिर 2005*
6. *कुलकर्णी टी. एन. "शैक्षिक प्रौद्योगिकी" विनोद पुस्तक मंदिर 2007*
7. *मंगल एस.के. मंगल शुभ्रा "शैक्षिक तकनीकी के मूल तथ्व एवं प्रबन्ध" लायन बुल डिपो मेरठ - 2008*
8. *माथुर एस.एस. "शैक्षिक तकनीकी" विनोद पुस्तक मंदिर आगरा - 2008*
9. *कुलश्रेष्ठ एस.पी. "शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार " संस्करण 2007 पृ. 114*
10. *कुलश्रेष्ठ एस.पी. "शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार 2005 विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा पृ.सं. 170*
11. *मिश्र दिवाकर "शिक्षा तकनीकी एवं सम्प्रेषण कौशल " अपोलो प्रकाशन, जयपुर, संस्करण पृ'. 170*
12. *भूषण शैलेन्द्र, वार्ष्णेय अनिल कुमार "शैक्षिक तकनीकी 2008 पृ.स. 192।*